International Journal of Information Movement Vol.II Issue II (June 2017)
Website: ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 15-25

ग्रामीण कृषक एवं सूचना संचार प्रौद्योगिकी

डॉ. रणबीर सिंह
अध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
आई.के.गुजराल पंजाब तकनीकी विश्वविद्यालय, कपूरथला
e-mail: ***ranbirdoaba@gmail.com***

बलबीर कुमार
सीनियर रिसर्च स्कोलर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
आई.के.गुजराल पंजाब तकनीकी विश्वविद्यालय, कपूरथला
e-mail: ***balbirkkr83@gmail.com***

"अपनी नैतिक स्थिति के सही होने की आस्था ही बुद्धि के आक्रमण के खिलाफ मनुष्य का एकमात्र दुर्ग होती है।" **महात्मा गांधी**

सारांश:– सूचना ही शक्ति है तथा संचार लोगों को सूचनाओं से सुसज्जित करने में अहम् भूमिका निभाता है। विकासात्मक संचार ऐसे विकास के लिए कार्य करता है जो सहभागिता और विकेन्द्रीकरण पर आधरित है। संचार क्रांति पूरे विश्व के लिए वरदान साबित हो रहा है। इसका अन्दाजा हम विश्व के 'वैश्विक गांव' यानि गांवों में बदली दुनिया से बाखूबी लगा सकते हैं। इंटरनेट वैकल्पिक मीडिया के रूप में विकासात्मक संचार का प्रतिफल है इसे सूचना राजपथ के नाम से भी जाना जाता है। यह एक ऐसा प्लेटफार्म या स्थल है जहां से लोग विभिन्न सूचनाएं निशुल्क या क्रय कर सकता है जिसके माध्यम से विभिन्न सूचनाएं प्राप्त कर सकते हैं।[1]

प्रस्तुत शोध में सैपल सर्वे और सहभागी अवलोकन पद्धति से यह जानने का प्रयास किया गया है कि सूचना एचं संचार प्रौद्योगिकी ग्रामीण किसानों की आवश्यकताओं के अनुरूप सूचना उपलब्ध करवा पा रही है? क्या संचार प्रौद्योगिकी इन किसानें को इनकी आवश्यकताओं के अनुसार लाभ उपलबध करा रही है? क्या सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों के प्रयोग से वे आर्थिक व सामजिक रूप से स्वतंत्र हो रहे है? आदि का अध्ययन इस शोध में किया गया है।

महत्वपूर्ण शब्द:– सूचना प्रौद्योगिकी, ई चौपाल, ग्रामिण कृषकों, कृषि दर्शन

1.0 परिचयः-

इस शोध पत्र में हरियाणा के गाँवों में रह रहे कृषक (किसान) तक सूचना प्रौद्योगिकी की पहुंच उनके प्रयोग की क्षमता एवं तरीका उनकी संचार व सूचना की आवश्यकताएँ व उपलब्ध सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा इन आवश्यकताओं की पूर्ति का अध्ययन किया गाया है। इस शोध में सैंपल सर्वे एवं सहभागी पुनर्निरीक्षण विधियों का प्रयोग कर मात्रात्मक और गुणात्मक आंकडों को प्रस्तुत किया गया है।

सूचनाओं की संख्या जितनी अधिक होती है, उतनी ही अधिक सफलतापूर्वक व्यक्ति अपनी राय बनाता है और उतने ही अधिक आत्म विश्वासपूर्वक निर्णय करने में समर्थ होता है। सूचना के आधार पर हम अपने विचार एवं मत निर्धारित करते हैं कि सूचनाओं के आधार पर ही हम अपनी रूचियां और अरूचियां बनाते रहते हैं तथा वे हमारी मनोग्रंर्थियों का भी निर्माण करती है। सूचना सामान्य ज्ञान में परिवर्तित होती है और सामान्य ज्ञान व्यकित को निरीक्षण प्रशिक्षण की शक्ति प्रदान करता है जिससे व्यक्ति में आत्म चिंतन का विकास होता है और आत्म चिंतन व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाने में योगदान देता है। आत्मनिर्भरता जीवन को अपने अनुसार जीने की आजादी देती है।

सूचना की इस महत्ता को समझते हुए ही आज पूरे विश्व में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों का प्रयोग विकास के पर्याय के रूप में किया जा रहा है। अविकसित और विकासशील देशों में तो सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों का महत्त्व और भी ज्यादा है क्योंकि इन देशों में आधारभूत सुविधाओं की कमी है और इन सुविधाओं की कमी के कारण उत्पन्न भेदों को सूचना और संचार के द्वारा न्यूनतम करने के प्रयास किए जा रहे। प्रारम्भिक समय में ग्रामीण नागरिक सूचना के रूप में पत्र-पत्रिकाओं, अखबारों के माध्यम से अपने को देश-दुनिया से जोड़कर सूचनाएं प्राप्त करते थे, लेकिन सूचनाएं बहुत देर से पहुंचती थी।[2] गांव की संचार दुनिया बहुत छोटी थी जिसमें मुख्य रूप से मेले, दूरदराज से आने वाले दुकानदार तथा साधू, सन्त, या फकीर ग्रामीणों तक खबरें पहुंचाने के माध्यम थे। सूचना ही शक्ति है तथा संचार लोगों को सूचनाओं से सुसज्जित करने में अहम-भूमिका निभाता है।

आज ग्रामीण कृषकों को संचार के माध्यम से सूचनाएं प्राप्त करने के विभिन्न कार्यक्रम है जो ग्रामीणों को उनके कार्यो में सुगमता लाने एवं उन्नति में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। जो निम्न है- किसान कॉल सैन्टर, पाँच-स्तरीय प्रणाली, ई चौपाल, ग्राम

ज्ञान केन्द्र, कृषि दर्शन,

2.0 किसान कॉल सैन्टर:-

केन्द्रीय कृषि मंत्रालय द्वारा इसकी शुरूआत 21 जनवरी, 2004 को की गई, इसका मूल उद्देश्य कृषि से जुड़ी किसी भी समस्या का हल किसानों को बताना है। भारत के किसी भी कोने का किसान 1551 नंबर डॉयल कर अपनी समस्या का हल पा सकता है। यह टोल फ्री नंबर होता है और यह सभी भाषाओं में उपलब्ध है। ये सेंटर किसानों को विभिन्न फसलों की देखरेख के साथ ही मौसम आधारित बीमारियों से निबटने की जानकारी भी दे रहें है।किसान किस तरह से खेती के जरिए अधिक से अधिक मुनाफा कमा सकता है इस दिशा में किसान काल सेंटर काफी उपयोगी साबित हो रहे है।

2.1 पांच-स्तरीय प्रणाली :-

किसानों को मौसम की सही जानकारी मिले इसके लिए पांच स्तरीय प्रणाली विकसित की गई। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय इसका नोडल मंत्रालय है। मौसम विभाग मुख्यालय मौसम की पूर्व सूचना देने का मुख्य स्त्रोत है। भारत मौसम विभाग ने 1976 में संबंधित राज्य सरकारों के साथ मिलकर कृषि मौसम कृषक सलाह सेवा अपने राज्य मौसम केन्द्रों से शुरू की।

2.1.1 ई-चौपाल:-

भारत के किसानों के लिए जून 2000 से ई-चौपाल का भी आयोजन किया जा रहा है। इस परियोजना का संचालन उतर प्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, हरियाणा एवं उतराखं डमें किया जा रहा है। देश में करीब 40 हजार से अधिक गांव कियोस्क से जुड़ चुके है। किसान इन कियोस्कों के जरिए अपनी समस्या का समाधान पा रहें है। इन ई-चौपाल केन्द्रों की स्थापना गांवों में सरकार द्वारा तथा निजी कम्पनियों द्वारा भी की जा रही है। ई-चौपाल, केन्द्र सरकार, निजी कम्पनियों, विकास संस्थाओं एवं राज्य सरकारों का ऐसा नेटवर्क है जो इन्टरनेट के माध्यम से गांवों में ही किसानों को कृषि की जानकारी बाजार मांग, विपणन एवं कृषि सम्बन्ध जानकारी उपलब्ध कराता है।

2.1.2 ग्राम ज्ञान केन्द्र:-

भारत सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में ज्ञान केन्द्र स्थापित किए हैं जो गांवों और शहरों के बीच सूचना प्राप्त करने के लिए ब्रिज का कार्य कर रहे हैं। इन सूचना

केन्द्रों पर ग्रामीणों तथा किसानों को कृषि सम्बन्धी नई जानकारी, बाजार भाव, कृषि उपज के विपणन की जानकारी सुलभ हो रही है।

2.1.3 किसान चैनल योजनाः-

इंदरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्याल एवं टेरेस्टरियल नेटवर्क के सहयोग से वर्ष 2004 से किसान चैनल योजना का संचालन किया जा रहा है। इसके जरिए कृषि संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है।जिसमें किसानों से जुड़ी विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए जानकारी दी जाती है। इसका उद्देश्य कृषि प्रयोगशालाओं एवं अनुसंधान केद्रों को जोड़ना है।

2.1.4 कृषि दर्शनः-

इस कार्यक्रम की शुरूआत 26 जनवरी, 1967 में हुई थी यह कार्यक्रम दूरदर्शन केन्द्र दिल्ली से शाम 6:30 बजे सोमवार से शुक्रवार को प्रसारित करता है। इस कार्यक्रम के माध्य से ग्रामीण दर्शकों के लाभ के लिए पशुपालन, कृषि, परिसर कल्याण, स्वास्यि और स्वचछता आदि पर यह जानकारी प्रदान करता है। यह दूरदर्शन पर सबसे पुराने कार्यक्रमों में से एक है।

भारतीय ग्रामीण परिवेश में भी सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। साथ ही ग्रामीण भारत ने कार्यरत सरकारी, अर्धसरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं में भी सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों को स्थानांतरित किया जा रहा है। ताकि ग्रामीण भारत में मूलभूत सुविधाएं एवं सुनियोजित, क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित रूप से लोगों को प्रदान की जा सके। परन्तु सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकिओं के संबंध में आज भी कुछ गंभीर प्रश्न निस्तरित है। क्या सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों की पहुंच उस समुदाय के हर वर्ग तक उनकी आवश्यकताओं और जरूरतों की सूचना को सुनिश्चित करती है। क्या हर वर्ग उस प्राप्त सूचना का अपने हित में प्रयोग करने में सक्षम है? क्या हर वर्ग उस प्राप्त सूचना से ज्ञान अर्जित कर उस ज्ञान का संचार करने में समर्थ है।[3]

हरियाणा भारत का एक प्रमुख कृषि प्रधान राजय है जिसकी लगभग दो तिहाई जनसंख्या गांवों में रहती है एवं कृषि या कृषि से संबंधित कार्यो में संलग्न है। हरियाणा की क्षेत्रीय स्थिति के कारण वैसे तो यह एक समर्थ राज्य है लेकिन पिछले दो दशकों में हुए परिवर्तनों के कारण यहां भी हर वर्ग आर्थिक एवं सामाजिक रूप से एक समान विकसित नहीं हो पाया है एक और जहां कृषि कार्यो के प्रति रूचि में

गिरावट आई है। वहीं औद्योगिक और सेवा क्षेत्र में ग्रामीण युवाओं के लिए उपयुक्त अकसर भी उपलब्ध नहीं है। ऐसे ही ग्रामीण किसान आधुनिकता और परम्परा के बीच दुविधा में है। ऐसे संक्रमण के दौर में एक ओर जहां सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों हरियाणा के ग्रामीण समाज के हर वर्ग अपनी पहुंच बना रही है वहीं इन प्रौद्योगिकियों के द्वारा उपलब्ध करवाई जा रही सूचनाओं से हर वर्ग लाभान्वित हो रहा है इस बात पर बड़ा प्रश्नचिह्न है।[6] सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों का महत्त्व तभी है। जब ये प्रोद्यौगिकियां ग्रामीण समाज के हर वर्ग की आवश्यकताओं अनुसार सूचनाएं उपलब्ध कराएं तथा सभी को अपनी इच्छाओं अनुसार संचार करने के अवसर प्रदान करें। यदि ऐसा नहीं हो पाया तो ये प्रौद्योगिकियां एक ऐसे भेद समाज में उत्पन्न कर देगी जिसे खत्म करना असंभव होगा।

3.0 शोध की प्रासंगिकता:-

आज भारत का किसान एस एम एस के जरिए मौसम की जानकारी प्राप्त कर रहा है तो किसान काल सेंटर और ई-चौपाल जैसी सुविधाओं से खेती मे होने वाले खतरे कम हो रहें है। अब किसान को न तो मौसमी बीमारियों की वजह से नुकसान उठाना पड़ रहा है ओर न ही प्राकृतिक कारणों से। मौसम विभाग की ओर से मौसम की पल-पल की खबरें किसानों तक आसानी से पहुंच रही है। इतना ही नही मोबाइल का चलन होने की वजह से किसानों को खेतों की निगरानी में होने वाला खर्च भी बचा है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की इस महत्ता को समझते हुए ही आज सभी गांवो में संचार प्रौद्योगिकी को बड़ाया जा रहा है जिससे कृषक सरकार द्वारा सभी तकनीकियों ई-गवर्नेस, ई-कृषि, ई-चौपाल, किसान कॉल सैन्टर आदि के बारे में किसानों को जागरूक किया जा सकें।

चुंकि सूचना एवं संचार के जरिए जीवन स्तर, सोच एवं कार्यशैली में गुणात्मक सुधार हो रहा है। गांवो में संचार के साथ ही विकास से जुडी अन्य सुविधाएं भी पहुंच रही है। ऐसे मे इस शोध की प्रासंगिकता ओर भी बड़ जाती है। हरियाणा के ग्रामीण कृषकों (किसानों) का अध्ययन सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों की इसी दृष्टि से किया गया है। क्या सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों ग्रामीण किसानों की आवश्यकताओं के अनुसार सूचना उपलब्ध कर पा रही है? क्या वे इन किसानें को इनकी आवश्यकताओं के अनुसार लाभ उपलबध करा रही है? क्या सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों के प्रयोग से वे आर्थिक व सामजिक रूप से स्वतंत्र हो रहे है? इन

प्रश्नों की पड़ताल करना वर्तमान दौर में बहुत अधिक प्रासंगिता प्रतीत होता है। इस अध्ययन के माध्यम से उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर तलाशने का प्रयास किया गया है इसके आधार पर सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की दिशा में नीतियां बनाने में सहायता मिलेगी।

3.1 शोध के उद्देश्य:-

- सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ग्रामीण किसानों को आवश्यकताओं के अनुरूप सूचना उपलब्ध करवा रही है का अध्ययन करना।
- सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी किसानें को इनकी आवश्यकताओं के अनुसार लाभ उपलबध करा रही है को जनना।
- सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों के प्रयोग से वे आर्थिक व सामजिक रूप से स्वतंत्र हो रहे है का अध्ययन करना।

3.2 शोध-विधि:-

हरियाणा के ग्रामीण कृषकों के जीवन में सूचना प्रौद्योगिकी की पहुंच और उससे उत्पन्न परिवर्तन की वास्तविक स्थिति को जानने के लिए इस शोध में सैपल सर्वे विधि और सहभागी अवलोकन विधि का प्रयोग किया गया है। हरियाणा में स्थित कुरूक्षेत्र जिले को हरियाणा के प्रतिनिधित्व के रूप में चयनित कर, इसके चार ऐसे गांवों को चयन किया गया, जो किसी भी प्रकार से सीधे रूप से कुरूक्षेत्र शहर एवं मुख्य राजमार्ग से नहीं जुडे हैं। इसके बाद प्रत्येक गांव में 12 से 14 दिन रहकर प्रत्येक गांव से 50 घरों का चयन उन गांवों की बनावट और जातियों के आधार पर प्रतिदर्शन विधि द्वारा कर कुल 200 परिवारों का अध्ययन किया गया।

इस शोध पत्र में 200 परिवारों में उपस्थित किसानों के द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग का विश्लेषण कर तथ्यों को प्रस्तुत किया गाया व साथ ही सहभागी अवलोकन से प्राप्त अनुभवों को भी साझा किया है।

4.0 विवेचना एवं विश्लेषण:

तालिका 1:– ग्रामीण घरों में सूचना प्रौधोगिकी

गाँव	कम्पयूटर	इंटरनेट	मोबाइल	टेलिविजन	रेडियो
1	171(85.5%)	190(95%)	22(0.5%)	19(9.5%)	76(38.%)
2	27(13.5%)	10(5%)	41(20.5%)	177(88.5%)	124(62%)
3	2(1%)	0	76(38%)	4(2.0%)	0
4	0	0	61(27.5%)	0	0
कुल	200	200	200	200	200

तलिका 1 के विश्लेषण से पता चलता है कि हरियाणा के गाँवों में मोबाइल फोन एंव टेलिविजन ने अपनी अहम जगह बना ली है। हर घर मैं औसतन 3 से 4 मोबाइल फोन उपलबध है। वहीं लगभग 90 प्रतिशत घरों में टेलिविजन हैं। लगभग हर टेलिविजन पर केबल या डीश उपलब्ध है। कम्यपूटर और इंटरनेट की उपलब्धता में यद्वपि गाँव अभी नगण्य है जो कि एक चिन्ता का विषय है क्योकि कम्पयूटर और इंटरनेट ही दो ऐसे साधन है जो हर प्रकार की सूचना एक समय एंव एक साथ उपलब्ध करवाने की क्षमता रखते है। टेलिविजन यद्वपि लगभग 90 प्रतिशत घरों में उपलब्ध है परन्तु ग्रामिण कृषकों की दिनचर्या ऐसी है कि उनके पास इसे देखने का समय बहुत कम है। ग्रामिण कृषकों का ज्यादा समय कृषि, पशुधन, और घरेलू कार्य में वयतित होता है। हरियाणा के गाँवो में एक परिवर्तन यह भी नजर आया कि आधूनिकता के पर्याय साधनों जैसे कि मोटर साइकिल, प्राइवेट स्कूल, मोबाइलए गैस चूल्हा, फ्रिज, और वांशिग मशीन आदि हर एक घर के अन्दर अपनी जगह बना चूके है वे परिवार इन साधनों को जूटाने के लिए प्रयासरत है। एकल परिवार एवं बढ़ती जनसंख्या के कारण जमीन का रकाबा घटा है व खेतिहर मजदूरों को कृषि यंत्रो ने बेकार बना दिया है। इन परिस्थितियों में सबसे अधिक जरूरत है ग्रामिण परिवारों के आर्थिक उत्थान की।सूचना एवं प्रौधोगिकियों का इस कार्य में योगदान नग्णय है।

तलिका 2:- ग्रामिण कृषकों तक मोबाइल फोन उपलबधता

	अशिक्षित कृषक	शिक्षित कृषक
व्यक्तिगत	121(63.53%)	12
सांझा	60(33.14%)	7
कुल	181	19

मोबाइल फोन आज एक साझां साधन न होकर व्यक्तिगत साधन का रूप ले चुका है। आज कृषकों के पास व्यकितगत मोबाइल फोन उपलब्ध है। जिससे तालिका से हमें पता चलता है कि ग्रामिण कृषकों की मोबाइल तक पहुच को संतोषजनक माना जा सकता है। कृषकों के पास मोबाइल फोन के प्रयोग से उनकी आवश्यकताओं के अनुसार सूचना और संचार करने के अवसर उपलब्ध है। जिसके साकरात्मक हल इस प्रौधोगिकी को सही माहनों में कृषकों को साधन सम्पन बनाया जा सकता है।

तलिका 3:- ग्रामिण कृषकों का सूचना व प्रौधोगिकी के प्रयोग का ज्ञान

	अशिक्षित कृषक			शिक्षित कृषक		
	कम्पयूटर	इंटरनेट	मोबाइल	कम्पयूटर	इंटरनेट	मोबाइल
कभी प्रयोग नही किया	181(100%)	181(100%)	0	12	19	0
पूर्णत निर्भर	0	0	0	5	0	0
सीमित प्रयोगकर्ता	0	0	181(100%)	2	0	14
योग्य प्रयोगकर्ता	0	0	0	0	0	5
निपूण प्रयोगकर्ता	0	0	0	0	0	0
कुल	181	181	181	19	19	19

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हो रहा है कि कम्पयूटर और इंटरनेट का प्रयोग ग्रामिण कृषकों द्वारा कभी नही किया गया है। मोबइल फोन यद्वपि हर कृष्क द्धारा किया जा रहा है लेकिन इसमें भी प्रयोग की क्षमता सीमित ही है। सीमित प्रयोगकर्ता से यहां अभीप्राय है कि मोबाइल का प्रयोग केवल संचार के लिए किया जाता है व मोबाइल

फोन को मिलाना व काटना आता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि ग्रामिण कृष्कों को कृषि सम्बधित सूचनाऐं अभी प्राप्त नही हो रही है जिसका मुख्य कारण अभी प्रौद्योगिकी के प्रयोग का ज्ञान कम होना है।

तालिका 4:- ग्रामिण कृष्कों द्वारा मोबाइल फोन का प्रयोग

	अशिक्षित कृषक	शिक्षित कृषक
केवल परिवार संचार के लिए	97(53.59%)	6
संचार एवं सूचना के लिए	0	5
म्नोरजन के लिए	0	5
पारिवारिक संचार एवं घड़ी के लिए	84(46.40%)	3
परिवारिक संचार एवं संदेश एंव अनुस्मारक के लिए	0	0
कुल	181	19

ग्रामिण कृषकों द्वारा मोबाइल फोन का प्रयोग केवल पारिवारिक संचार के लिए किया जा रहा है। ग्रामिण कृषकों की दिनचर्या और जीवन पद्वति का जब विश्लेषण किया तो उनकी जरूरतों और उन जरूरतों के लिए आवश्यक सूचनाओं के क्षेत्रो का पता लगा। स्वास्थय हर व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है और कृषकों के लिए तो यह ओर भी अहम हो जाता है क्योकि इनके स्वास्थय पर ही परिवार का स्वास्थय निर्भर करता है। गाँव में परिवारो की आय का एक बहुत बड़ा हिस्सा स्वास्थय पर खर्च हो रहा है। अधिकतर बिमारियाँ ऐसी है जिनका निदान खान-पान में कुछ सावधानियाँ से और घरेलू उपचारों से किया जा सकता है और कृषकों की शिक्षा, ज्ञान और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों के प्रयोग की क्षमता स्वास्थय संबंधित इस खर्च को कम कर परिवार की आर्थिक स्थिति में योगदान कर सकती है। परन्तु विड़म्बना है कि ऐसा कोई प्रयास स्वास्थय सेवाओं और सरकार की तरफ से नही किया गया है। यदि ग्रामिण कृषकों के पास ऐसा कौइ टेलिफोन नम्बर हो जहाँ वे फोन करके स्वास्थ्य संबंधी सूचना प्राप्त कर सकें तो सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों के महत्व को आर्थिक एवं सामाजिक विकास से जोड़ा जा सकता है। पारिवारिक संचार ही केवल मोबाइल फोन का एकमात्र कार्य नही है मोबाइल फोन एक ऐसी प्रौधिगिकी जिसकी पहुँच ग्रामिण कृषकों तक है व उसके प्रयोग की क्षमता भी सन्तोषजनक है। यदि ग्रामिण कृषकों के पास मोबाइल फोन को परिवार नियोजन, पशुधन, स्वास्थय, ऋण सुविधाएं,

बच्चों की शिक्षा, कृषकों कें लिए चलाई जा रही सरकारी स्कीमों से संबंधित जानकारियो के लिए प्रयोग करने कम अवसर उपलब्ध हो तो उन्हें आर्थिक व सामाजिक रूप से सुदृढ़ किया जा सकता है। किसान कॉल सेंटर, महिला हेल्प लॉइन नम्बर, पुलिस सहायता रूप से लागु नही हो पाई है (हरियाणा टेकनिकल एसोसिशन ने शोधकर्ता के आग्रह पर इन हेल्प लॉइन नम्बरों की कार्यप्रणाली की समिक्षा की, और एक प्रैस वार्ता के जरिए हरियाणा सरकार व टी.आर.ए.आई) से इस विषय पर सकारात्मक कदम उठाने की मॉग की।

5.0 प्राप्तियां :– डाटा विश्लेषण के आधार पर निम्नांकित परिणाम प्राप्त हुए है

- शोध से पता चलता है कि हरियाणा के गाँवों में मोबाइल फोन एंव टेलिविजन ने अपनी अहम् जगह बना ली है। हर घर मैं औसतन 3 से 4 मोबाइल फोन उपलबध है। वहीं लगभग 90 प्रतिशत घरों में टेलिविजन हैं।
- मोबाइल फोन आज एक साझां साधन न होकर व्यक्तिगत साधन का रूप ले चुका है। आज कृषकों के पास व्यकितगत 63 प्रतिशत मोबाइल फोन उपलब्ध है। जिससे तालिका से हमें पता चलता है कि ग्रामिण कृषकों की मोबाइल तक पहुच को संतोषजनक माना जा सकता है।
- शोध अध्ययन से स्पष्ट है कि कम्पयूटर और इंटरनेट का प्रयोग ग्रामिण कृषकों द्वारा कभी नही किया गया है। मोबइल फोन यद्वपि हर कृष्क द्धारा किया जा रहा है लेकिन इसमें भी प्रयोग की क्षमता सीमित ही है। इस प्रकार हम कह सकते है कि ग्रामिण कृष्कों को कृषि सम्बधित सूचनाऐं अभी प्राप्त नही हो रही है जिसका मुख्य कारण अभी प्रौद्योगिकी के प्रयोग का ज्ञान कम होना है।
- ग्रामिण कृषकों द्वारा मोबाइल फोन का प्रयोग केवल पारिवारिक संचार 46 प्रतिशत के लिए किया जा रहा है। कृषि सम्बधित मोबाइल फोन बहुत कम किया जाता है।

6.0 निष्कर्ष :– उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों ग्रामिण कृषकों के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण में कोई योगदान नही दे रही है। विकासात्मक संचार के शोधकर्ताओं एवं विद्वानों ने एक स्वर से इस बात को कहा है कि विकास के लिए समूदाय के हर वर्ग को केन्द्रित करने वाली सूचना एंव संचार प्रौद्योगिकियों की आवश्यकता है। रेडियो और टेलिविजन आज तक भी समूदाय विनिर्दिष्ट नही हो पाए है। कम्पयूटर, इंटरनेट और मोबाइल फोन ऐसी प्रौद्योगिकियाँ है

जिन्हें समूदाय विनिर्दिष्ट बनाया जा सकता है। लेकिन इस कार्य के लिए कई स्तर पर कार्य करने की आवश्यकता है। सबसे पहले यह सुनिश्चित करना होगा कि गाँव को बदलना है या गॉव को एक अलग पहचान देनी है। उनके सांस्कृतिक परिवेश और सामाजिक मूल्यों को बदलना है या इनके साथ ही उन्हें सशक्त होने के अवसर उपलब्ध करवाने है। इसके बाद उसी तरज पर सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों के विकास की आवश्यकता है। गाँव के हर वर्ग की आवश्यकताओं की पहचान कर सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों के प्रसार को बाजार के हाथ में छोड़ रखा है और बाजार शक्तियों का लाभ कमाना ही लक्ष्य होता है, जिस कारण उनसे जनहित की अपेक्षा नही की जा सकती। अभी गॉव ऐसी स्थिति में ऐसे सूचना एंव संचार पौद्योगिकियों के केन्दो की स्थापना की आवश्यकता है जहॉ जाकर ग्रमिण महिलाएं सूचना ले सकें, साथ ही सूचना एंव संचार प्रौद्योगिकियों के प्रयोग को बढावा देने के लिए ऐसे सूचना एंव विषय-वस्तु निर्माण केन्द्रो की आवश्यकता है जो समय पर उपयूक्त सूचना और सहायक सामाग्री उपलब्ध करा सकें।

7.0 संदर्भ:-

1. Asian Journal of Communication, Volume 18, December 2008
2. Agarwal, B (1981) SITE social Evaluation: Results, Experiences and Implications,
3. Katz E. James (2008) Handbook of Mobile communication studies, The MIT Press, Cambridge, Massachusetts London, England
4. Rogers and Sihghal, India's communication revolution, Sage Publication
5. http://yojana.gov.in/cms/(S(xvyv12utvzagvv45kmg03j3d))/pdf/Kurukshetra/Hin di/2006/Feb_2006_Vol52_No4.pdf
6. http:/yojana.gov.in/cms/(S(rdk5cdywz1elm5qaddg0esv5))/pdf/Kurukshetra/Hindi/2003/Oct_2003_Vol48_No12.pdf